

धूप सुवास विथार, चन्दन अगर कपूर की ।
 जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ ॥
 ॐ हीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा ।
 फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल ।
 जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ ॥
 ॐ हीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा ।
 आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये ।
 जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ ॥
 ॐ हीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्थपदप्राप्तये अर्थं निर्वपामीति स्वाहा ।
 सम्यक् दरशन ज्ञान ब्रत, शिव मग-तीर्नों मयी ।
 पार उतारन यान ‘द्यानत’ पूजों ब्रत सहित ॥
 ॐ हीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्थपदप्राप्तये पूर्णार्थं नि. स्वाहा ।

सम्यगदर्शन पूजन

(दोहा)

सिद्ध अष्ट-गुनमय प्रकट, मुक्त-जीव-सोपान ।
 ज्ञान चरित जिहूँ बिन अफल, सम्यकदर्श प्रधान ॥
 ॐ हीं श्री अष्टांगसम्यगदर्शन ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् इति आह्वाननम् ।
 ॐ हीं श्री अष्टांगसम्यगदर्शन ! अत्र तिष्ठ, तिष्ठ ठःठः इति स्थापनम् ।
 ॐ हीं श्री अष्टांगसम्यगदर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरण ।

(सोरठा)

नीर सुगन्ध अपार, तृषा है मल छय करै ।
 सम्यगदर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥
 ॐ हीं श्री अष्टांगसम्यगदर्शनाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
 जल केसर घनसार, ताप है सीतल करै ।
 सम्यगदर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥
 ॐ हीं श्री अष्टांगसम्यगदर्शनाय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै।

सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।

सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै।

सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीप-ज्योति तम हार, घट-पट परकाशै महा।

सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय मोहन्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप ग्रान-सुखकार, रोग विघ्न जड़ता हरै।

सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर-शिव-फल करै।

सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।

सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अनर्थ्यपदप्राप्तये अर्थ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

आप आप निहचै लखै, तत्त्व-प्रीति व्यवहार।

रहित दोष पच्चीस हैं, सहित अष्ट गुन सार॥

(चौपाई मिश्रित गीता)

सम्यक् दरशन-रतन गहीजे, जिन-वच में सन्देह न कीजै।

इह- भव-विभव-चाह दुःखदानी, पर- भव भेष चहै मत प्रानी॥

प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरम गुरु प्रभु परखिये।

पर-दोष ढकिये धरम डिगते को, सुथिर कर हरखिये॥

चहुँ संघ को वात्सल्य कीजै, धरम की परभावना।

गुन आठसों गुन आठ लहिकै, इहाँ फेर न आवना॥

ॐ हीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञान विनिष्ठादेवरहितसम्यग्दर्शनाय जयमालापूर्णार्थ्यं नि. स्वाहा।

सम्यग्ज्ञान पूजन

(दोहा)

पंच भेद जाके प्रकट, ज्ञेय-प्रकाशन भान।

मोह-तपन-हर-चन्द्रमा, सोई सम्यग्ज्ञान॥

ॐ हीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्, इति आह्वाननम्।

ॐ हीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठःठः, इति स्थापनम्।

ॐ हीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो, भव-भव वषट्, इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

नीर सुगन्ध अपार, तृष्णा हरै मल छय करै।

सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥

ॐ हीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जन्मजगामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल केसर घनसार, ताप हरै शीतल करै।

सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥

ॐ हीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै।

सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥

ॐ हीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अक्षयपदप्राप्ते अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।

सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥

ॐ हीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै ।
 सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥
 ॐ हीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 दीप-जोति तम-हार, घट पट परकाशै महा ।
 सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥
 ॐ हीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 धूप घ्रान-सुखकार, रोग विघ्न जड़ता हरै ।
 सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥
 ॐ हीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर-शिव-फल करै ।
 सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥
 ॐ हीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
 जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल-फूल चरु ।
 सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥
 ॐ हीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अनर्धपदप्राप्तये अर्धं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

आप आप जानै नियत, ग्रन्थ-पठन व्यवहार ।
 संशय-विभ्रम-मोह बिन, अष्ट अंग गुनकार ॥
 (चौपाई मिश्रित गीत)
 सम्यग्ज्ञान-रतन मन भाया, आगम तीजा नैन बताया ।
 अच्छ शुद्ध अर्थ पहिचानो, अक्षर अरथ उभय संग जानो ॥
 जानो सुकाल-पठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइए ।
 तप रीति गहि बहु मौन देकै, विनय-गुन चित लाइए ॥
 ये आठ भेद करम उछेदक, ज्ञान-दर्पन देखना ।
 इस ज्ञान ही सों भरत सीझा, और सब पट पेखना ॥
 ॐ हीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अनर्धपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्द्धं निर्वपामीति स्वाहा ।

सम्यकचारित्र पूजन

(दोहा)

विषय-रोग औषध महा, दव-कषाय-जल-धार।
तीर्थकर जाको धरै, सम्यकचारित सार॥

ॐ हीं श्री ब्रयोदशविधि-सम्यकचारित्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्, इति आह्वाननम् ।
ॐ हीं श्री ब्रयोदशविधि-सम्यकचारित्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठःठः, इति स्थापनम् ।
ॐ हीं श्री ब्रयोदशविधि-सम्यकचारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्, इति सन्निधिकरणम् ।

(सोरठा)

नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल छय करै।
सम्यकचारित सार, तेरह विधि पूजौं सदा॥

ॐ हीं श्री ब्रयोदशविधि-सम्यकचारित्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
जल केसर घनसार, ताप हरै शीतल करै।
सम्यकचारित सार, तेरह विधि पूजौं सदा॥

ॐ हीं श्री ब्रयोदशविधि-सम्यकचारित्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।
अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै।
सम्यकचारित सार, तेरहविधि पूजौं सदा॥

ॐ हीं श्री ब्रयोदशविधि-सम्यकचारित्राय अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।
पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविधि पूजौं सदा॥

ॐ हीं श्री ब्रयोदशविधि-सम्यकचारित्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
नेवज विविधि प्रकार, छुधा हरै थिरता करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविधि पूजौं सदा॥

ॐ हीं श्री ब्रयोदशविधि-सम्यकचारित्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
दीप-जोति तम-हार, घट-पट परकाशै महा ।
सम्यकचारित सार, तेरहविधि पूजौं सदा॥

ॐ हीं श्री ब्रयोदशविधि-सम्यकचारित्राय मोहाध्यकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप घ्रान-सुखकार, रोग विघ्न जड़ता हरै ।
सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥

ॐ हीं श्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर शिवफल करै ।
सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥

ॐ हीं श्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥

ॐ हीं श्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

आप आप थिर नियत नय, तप संयम व्यवहार ।
स्व-पर-दया देनों लिये, तेरहविध दुःखहार ॥

(चौपाई मिश्रित गीता)

सम्यक्चारित्र-रत्न सँभालौ, पाँच पाप तजि के ब्रत पालौ ।
पंच समिति त्रय गुसि गहीजै, नर-भव सफल करहु तन छीजै ॥
छीजै सदा तन को जतन यह, एक संजम पालिए ।
बहु रुल्यो नरक-निगोदमाहीं, विषय-कषायनि टालिए ॥
शुभ-करम जोग सुघाट आया, पार हो दिन जात है ।
'द्यानत' धरम की नाव बैठो, शिव-पुरी कुशलात है ॥

ॐ हीं श्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

सम्यग्दरशन-ज्ञान-ब्रत, इन बिन मुक्ति न होय ।
अन्ध पंगु अरु आलसी, जुदे जलैं दव लोय ॥

(चौपाई)

जापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करमबन्ध कट जावै ।
तासों शिव-तिय प्रीति बढ़ावै, जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै ॥
ताकौ चहुँति के दुःख नाहीं, सो न परे भवसागर माहीं ।
जनम-जरा-मृत दोष मिटावै, जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै ॥
सोई दशलच्छन को साधै, सो सोलहकारण आराधै ।
सो परमात्मपद उपजावै, जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै ॥
सोई शक्र-चक्रिपद लेई, तीनलोक के सुख विलसेई ।
सो रागादिक भाव बहावै, जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै ॥
सोई लोकालोक निहारे, परमानन्ददशा विसतारे ।
आप तिरै और न तिरवावै, जो सम्यक्रत्नत्रय ध्यावै ॥
ॐ हीं श्री सम्यगदर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्राय समुच्चयजयमाला अनर्थपदप्राप्तये
पूर्णार्थ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

एक स्वरूप-प्रकाश-निज, वचन कह्यो नहिं जाय ।
तीन भेद व्योहार सब, ‘द्यानत’ को सुखदाय ॥
ॐ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

श्री अरहंत छबि लखि हिरदै, आनन्द अनुपम छाया है ॥१॥
वीतराग मुद्रा हितकारी, आसन पद्म लगाया है ।
दृष्टि नासिका अग्रधार मनु, ध्यान महान बढ़ाया है ॥२॥
रूप सुधाकर अंजलि भरभर, पीवत अति सुख पाया है ।
तारन-तरन जगत हितकारी, विरद सचीपति गाया है ॥३॥
तुम मुख-चन्द्र नयन के मारग, हिरदै माहिं समाया है ।
प्रम तम दुःख आताप नस्यो सब, सुख सागर बढ़ि आया है ॥४॥
प्रकटी उर सन्तोष चन्द्रिका, निज स्वरूप दर्शाया है ।
धन्य-धन्य तुम छवि ‘जिनेश्वर’, देखत ही सुख पाया है ॥५॥

सोलहकारण पूजन

(पं. द्यानतरायजी कृत)

(अडिल्ल)

सोलह कारण भाय तीर्थकर जे भये।
 हरषे इन्द्र अपार मेरु पै ले गये॥
 पूजा करि निज धन्य लख्यो बहु चावसौं।
 हमहूं षोडश कारन भावैं भावसौं॥

ॐ हीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वराः ! अत्र अवतरत अवतरत, संवौषट्, इति आह्वाननम् ।

ॐ हीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वराः ! अत्र तिष्ठत-तिष्ठत ठःठः, इति स्थापनम् ।

ॐ हीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वराः ! अत्र मम सन्निहिताः भवत भवत वषट् इति सन्निधिकरणम् ।

(चौपाई आँचलीबद्ध)

कंचन-झारी निरमल नीर, पूजौं जिनवर गुण-गम्भीर।
 परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
 दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थकर-पद-पाय।
 परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥

ॐ हीं श्री दर्शनविशुद्धि-विनयसम्पन्नता-शीलत्रतेष्वनतिचार-अभीक्षणज्ञानोपयोग-संवेग-शक्तितस्त्यग-तपः साधुसमाधि-वैयावृत्यकरण-अर्हदभक्ति-आचार्यभक्ति-बहुश्रुतभक्ति-प्रवचनभक्ति-आवश्यकापरिहाणि-मार्गप्रभावना-प्रवचनवात्सल्येति -षोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन घसौं कपूर मिलाय, पूजौं श्री जिनवर के पाय ।
 परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ दरश. ॥

ॐ हीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन्दुल धवल सुगन्ध अनूप, पूजौं जिनवर तिहुँ जग-भूप ।
 परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ दरश. ॥

ॐ हीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

फूल सुगन्ध मधुप-गुंजार, पूजौं जिनवर जग-आधार।
 परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
 दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थकर पद-पाय।
 परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पूर्णं निर्वपामाति स्वाहा ।

सदनेवज बहुविधि पकवान, पूजौं श्रीजिनवर गुणखान ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश. ॥

३५ हीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोऽशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्विपामीति स्वाहा ।

दीपक-ज्योति तिमिर छ्यकार, पूर्जुं श्रीजिन केवलधार।

परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश. ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यो मोहान्धकार-
विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगर कपूरगन्ध शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय।

परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यो अष्टकर्म—
विध्वंसनाय धृपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल आदि बहुत फलसार पूजौं जिन वांछित-दातार।

परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश. ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्विपासीति स्वाहा ।

जल फल आठों दरब चढ़ाय, 'ध्यानत' वरत करो मनलाय।

परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यो अनर्थपदप्राप्तये अर्थ्य निर्विपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

षोडश कारण गुण करै, हरै चतुरगति-वास ।
पाप-पुण्य सब नाशके, ज्ञान-भान परकाश ॥

(चौपाई)

दरशविशुद्धि धरे जो कोई, ताको आवागमन न होई ।
विनय महाधारै जो प्राणी, शिव-वनिता की सखी बखानी ॥
शील सदा दृढ़ जो नर पालै, सो औरन की आपद टालै ।
ज्ञानाभ्यास करै मनमाहीं, ताके मोह-महातम नाहीं ॥
जो संवेग-भाव विस्तारै, सुरग-मुकति-पद आप निहारै ।
दान देय मन हरष विशेषै, इह भव जस पर भव सुख देखै ॥
जो तप तपै खपै अभिलाषा, चूरै कर्म-शिखर गुरु भाषा ।
साधुसमाधि सदा मन लावै, तिहुँ जग भोग भोगि शिव जावै ॥
निश-दिन वैयावृत्य करैया, सो निहचै भव-नीर तिरैया ।
जो अरहंत भगति मन आनै, सो जन विषय-कषाय न जानै ॥
जो आचारज-भगति करै है, सो निर्मल आचार धरै है ।
बहुश्रुतवन्त-भगति जो करई, सो नर संपूर्न श्रुत धरई ॥
प्रवचन-भगति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानन्द-दाता ।
षट् आवश्यक काल जो साधै, सो ही रत्नत्रय आराधै ॥
धरम-प्रभाव करै जे ज्ञानी, तिन शिव-मारग रीति पिछानी ।
वत्सल अंग सदा जो ध्यावै, सो तीर्थकर पदवी पावै ॥

ॐ हीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यो जयमाला-
पूर्णार्थ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

एही सोलह भावना, सहित धरै ब्रत जोय ।
देव-इन्द्र-नर-वंद्य-पद, 'द्यानत' शिव-पद होय ॥

(पुष्पाभ्यजलिं क्षिपेत्)

पंचमेरु-पूजन

(पं. द्यानतरायजी कृत)

(गीता छन्द)

तीर्थकरों के न्हवन-जलतैं भये तीरथ शर्मदा,

तातै प्रदच्छन देत सुर-गन पंचमेरुन की सदा ।

दो जलधि ढाई द्वीप में सब गनत-मूल विराजही,

पूजौं असी जिनधाम-प्रतिमा होहि सुख दुःख भाजही ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीति जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्, इति आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीति जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः इति स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीति जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् इति सन्निधिकरणम् ।

(चौपाई आँचलीबद्ध)

सीतल-मिष्ट-सुवास मिलाय, जलसौं पूजौं श्री जिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करो प्रणाम ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन-विजय-अचल-मन्दिर-विद्युन्मालीपंचमेरुसंबंधि-अशीति जिनचैत्या-लयस्थजिनबिम्बेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल केशर करपूर मिलाय, गंधसौं पूजौं श्रीजिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ पाँचों ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधिअशीति जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अमल अखंड सुगंध सुहाय, अच्छतसौं पूजौं जिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ पाँचों ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीति-जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

बरन अनेक रहे महकाय, फूलसौं पूजौं श्री जिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः कामबाणविधंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन-बांधित बहु तुरत बनाय, चरुसौं पूजौं श्री जिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीति-जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तम हर उज्ज्वल ज्योति जगाय, दीपसौं पूजौं श्री जिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

खेऊँ आगर अमल अधिकाय, धूपसौं पूजौं श्री जिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अष्टकमविनाशनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरस सुवर्ण सुगन्ध सुभाय, फलसौं पूजौं श्री जिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीति-जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं
निर्वपामीति स्वाहा ।

आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्री जिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

प्रथम सुर्दर्शन-स्वामि, विजय अचल मन्दर कहा ।

विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जग में प्रकट ॥

(बेसरी छन्द)

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भू पर छाजै।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
ऊपर पांच-शतक पर सोहै, नन्दन-वन देखत मन मोहै।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
साढ़े बासठ सहस ऊँचाई, वन सौमनस शोभै अधिकाई।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
ऊँचा जोजन सहस-छतीसं, पाण्डुक-वन-सोहै गिरि-सीसं।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
चारों मेरु समान बखाने, भू पर भद्रसाल चहुँ जाने।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
ऊँचे पाँच शतक पर भाखै, चारों नन्दनवन अभिलाखै।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
साढ़े पचपन सहस उतंगा, वन सौमनस चार बहुरंगा।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
उच्च अठाइस सहस बताये, पाण्डुक चारों वन शुभ गाये।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
सुर-नर-चारन वन्दन आवैं, सो शोभा हम किह मुख गावैं।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जयमालामहाद्यं
निर्वपामिति स्वाहा ।

(दोहा)

पंचमेरु की आरती, पढ़े सुनै जो कोय।
‘द्यानत’ फल जानै प्रभो, तुरत महासुख होय ॥
(पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)